UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –28-32

"बाल केन्द्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में"

प्रियंका झा
देवी अहिल्या विश्व विद्यालय इन्दौर

सारांश :–
प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य बालको के मस्तिष्क में मात्र कुछ जानकारीयॉ भरना होता थाः किन्तु आधुनिक शिक्षा शास्त्र में बालको के सर्वागीण विकास पर जोर दिया जाता है जिसके लिए अबाल मानेविज्ञान की भूमिका सर्वधिक महत्वपूर्ण होती है इसलिए वर्तमान समय में बालको के सार्वगीण विकास के महत्व को समझते हुए शिक्षको के लिए बाल मनोविज्ञान की पर्याप्त जानकारी आवश्यक होती है। इस जानकारी के अभाव में शिक्षक न तो शिक्षा को अधिक से अधिक आकर्षक और सुगम बना सकता है और न ही वह बालको की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान कर सकता है। इस प्रकार बालको के मनोविज्ञान को समझते हुए अनके लिए शिक्षा की व्यवस्था करने की आधुनिक शिक्षा प्राणाली बालकेन्द्रित शिक्षा कहलाती है। आज की शिक्षा पद्धति बाल केन्द्रित है। इसमें प्रत्यचेक बालक की और अलग सेध्यान दिया जाता है। पिछडे हुए और मन्द बुद्धि तथा प्रतिभाशाली बालाकों के लिए शिक्षा का विशेष पाठ्यक्रम देने का प्रयास किया जाता है। व्यावहारिक मनोविज्ञान ने व्यक्तियों की परस्पर विभिननताओं पर प्रकाश डाला है। जिससे यह सम्भव हो सका है कि शिक्षक हर एक विद्यार्थी की विशेषताओं पर धन दे और उसके लिए प्रबन्ध रकें। आज के शिक्षक को केवल शिक्षा एवं शिक्षा पद्धति के बारे में नही बल्कि शिक्षार्थी के बारे में भी जानना होता है। क्योंकि आधुनिक शिक्षा विषय प्रधान या अध्यापक प्रधान न होकर बालकेन्द्रित है।

प्रस्तावना :–

बालकेन्द्रित शिक्षा

प्राचीनकाल में शिक्ष्द्याा का उद्देश्य बालको के मस्तिष्क में मात्र कुछ जानकारीयॉ भरना होता थाः किन्तु आधुनिक शिक्षा शास्त्र में बालको के सर्वागीण विकास पर जोर दिया जाता है जिसके लिए अबाल मानेविज्ञान की भूमिका सर्वधिक महत्वपूर्ण होती है इसलिए वर्तमान समय में बालको के सार्वगीण विकास के महत्व को समझते हुए शिक्षको के लिए बाल मनोविज्ञान की पर्याप्त जानकारी आवश्यक होती है। इस जानकारी के अभाव में शिक्षक न तो शिक्षा को अधिक से अधिक आकर्षक और सुगम बना सकता है और न ही वह बालको की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान कर सकता है। इस प्रकार बालको के मनोविज्ञान को समझते हुए अनके लिए शिक्षा की व्यवस्था करने की आधुनिक शिक्षा प्राणाली बालकेन्द्रित शिक्षा कहलाती है। आज की शिक्षा पद्धति बाल केन्द्रित है। इसमें प्रत्यचेक बालक की और अलग सेध्यान दिया जाता है। पिछडे हुए और मन्द बुद्धि तथा प्रतिभाशाली बालाकों के लिए शिक्षा का विशेष पाठ्यक्रम देने का प्रयास किया जाता है। व्यावहारिक मनोविज्ञान ने व्यक्तियों की परस्पर विभिननताओं पर प्रकाश डाला है। जिससे यह सम्भव हो सका है कि शिक्षक हर एक विद्यार्थी की विशेषताओं पर धन दे और उसके लिए प्रबन्ध रकें। आज के शिक्षक को केवल शिक्षा एवं शिक्षा पद्धति के बारे में नही बल्कि शिक्षार्थी के बारे में भी जानना होता है। क्योंकि आधुनिक शिक्षा विषय प्रधान या अध्यापक प्रधान न होकर बालकेन्द्रित है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –28-32

बालकेन्द्रित शिक्षा की विशेषताएँ

किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए शिक्षक को बालकों के मनोविज्ञान की जानकारी अवश्यक होनी चाहिऐ। इसके अभाव में वह बालको की न तो विभन्न प्रकार की समस्याओं को समझ कसता है और न ही उनकी विशेषताओं को जिसके परिणामस्वरुप बालको परशिक्षक के विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकाता है। बालक के सम्बन्ध में शिक्षक को उसके यवहार के मूल आधारों आपश्यकताआकें, मानसिक स्तर, रुचियों योग्यताओं, व्यक्तित्व इत्यादि का विस्तृत का ज्ञान होना चाहिऐं। व्यवहार के मूल आधारें का ज्ञान तो सबसे अधिक आवश्यक है क्योंकि शिक्षा का उद्‌देश्य ही बालक के यवहार को परिमार्जित करना है अतः शिक्षा बालक की मूल प्रवृत्तियों प्रेरणाओं और सवंगों पर अधारित होनी चाहिए व्यवहार के इन मूल आधारो को नई दिशा में मोडा जा सकता है, इसका शोधन किया जा सकता है इनको बालक में से निकाला जा सकता है। इसलिए सफल शिक्षक इनके शोधीकरण का प्रयास करता है। बालक जो भी सीखता है उससे उसकी आवश्यकताओं का बड़ा निकट सम्बन्ध है। स्कूल में पिछडे हुए और समस्याग्रस्त बालको में से अधिकतर ऐसे होते है। जिनकी आवश्यकताएँ स्कूल में पूरी नहीं होती। इसलिए वे सडको पर लगे जिबली के बल्बों को फोड़ते है स्कूल से भाग जाते है, आवारागर्दी करते है और आस – पडोस के लोगो को तंग करते हतथा मोहल्ले के बच्चों को पीटते है। मनोविज्ञान कमे ज्ञान के अभव में शिक्षक मार – पीट के द्वारा इन दोषों को दूर करने का प्रयास करता है। परन्तु बालको को समझने वाला शिक्षक यह जानता है कि इन दोषो का मूल उनकी शारीरिक, सामाजिक अथवा मनोविज्ञानिक आवश्यकताअें में ही कहीं न कहीं है। बाल मनोविज्ञान शिक्षक को बालको के व्यक्तिगत भेदों से परिचित कराता है। और यह बतलाता है कि उनमें रुचि स्वभाव तथा बुद्धि आदि की दृष्टि से भिन्नता पाई जातीहै। अतः कुशल शिक्षक मन्द बुद्धि सामान्य बुद्धि तथा कुशाग्र बुद्धि बालको में भेद करके उन्हें उनकी योग्यताओं के अनुसार शिक्षा देता है। शिक्षा देने में शिक्षक को बालक और समाज की आवशकताअें में समन्वय करना होता है। स्पष्ट है कि इसके लिए असे बालक की पूर्ण मनोवैज्ञानिक जानकारी होनी चाहिए।

शिक्षण विधि –

शिक्षाशास्त्र शिक्षक को यह बतलाता है कि बालकों को प्क्या पढाया जाए परन्तु असली समस्यायह है कि, कैसे पढाया जाए? इस समस्या को सुलझाने मे बाल मनाविाान शिक्षक की सहायता करता है। बाल मनाविज्ञान सीखने प्रक्रिया विधियों महत्वपूर्ण कारकों लाभदायक और हानिकारक दशाओं रुकावटों सीखने का वक्र तथा प्रशिक्षण संक्रमण आदि।विभिन्न तत्वों से परिचित कराता है। इनके ज्ञान से शिक्षक बालकों को सीखने में सहायता कर सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण की विधियों का भी मनोवैज्ञानिक विशलेषण करता हैं। और उनमें सुधार के उपाय बतलाता है। बल केन्द्रित शिक्षा में शिक्षण विधि को प्रयोग में लाते समय बाल मनोविज्ञान को ही आधार बनाया जाता है।

मूल्यांकन और परीक्षण –

शिक्षण से ही शिक्षक की समस्या हल नही हो जाती। उसे बालको के ज्ञान और विकास का मूल्यांकन और परीक्षण करना होता हैं मूल्यांकरन से परीक्षार्थी की उन्नति का पता चलता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक और शिक्षार्थी बार – बार यह जानना चाहते हैं कि उन्होने प्रगति हासिल की हैं। यदि उन्हे सफलता या असफलता मिली है तो क्यों और उसमें क्या परिवर्तन किए जा सकते है। इस सभी प्रश्नों के सुसलझाने में मूल्यांकरन के सथ साथ विभिन्न प्रकार के परीक्षणों और मापो की आवश्यकता पड़ती है। मूल्यांकन अन्य लोग भी करते है एवं स्वयं व्यक्ति भी करता है। जहॉ शिक्षक स्वयं विद्यार्थी का मूल्यांकन करता है। वहॉ उसे यह सीखने में भी सहायता करता है कि वह स्वयं अपनी प्रगति का निष्पक्ष रुप से मुल्यांकन कर सकें। मुल्यांकन से प्रेरणाओं पर बडा प्रभाव पढ़ता है। और इसलिय उनका व्यवहार पर प्रभाव पढ़ता है। सभी प्रकार की मुल्यांकन विधियॉ मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधिरित होती है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –28-32

पाठ्यक्रम –

समाज और व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्कूल के पाठ्यक्रम का विकास व्यक्तिगत विभिन्नताओं, प्रेरणाओं मूल्यों एव सीखने के सिद्धान्तों के मनावैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर किया जाना चाहिएं पाठ्यक्रम बनाने में शिक्षक यह ध्यान रखता है कि शिक्षार्थी और समाज की क्या आवश्कताएँ है और सीखने की कोन सी क्रियाओं से ये आवश्यकताएँ सर्वोत्तम 3प से पूर्ण हो सकती है। भिन्न भिन्न परिस्थितयों में तथा विभिन्न स्तारें पर कुछ सीखने की क्रियाऐं वांछनीय हो सकती है और कुठ अवांछनीय यह निश्चित करने में शिक्षक को विकास की विभिन्न सितियेां का मनोवैज्ञानिक ज्ञान होना चाहिए। इस तरह बालकेन्द्रित शिक्षा में इस बात पर जोर दिया जात है कि क्रियात्मक होने के लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम एक समुचित मनावैज्ञानिक आधार पर स्थापित हो।

मानव सम्बन्ध –

बाल मनोविज्ञान ने शिक्षसक को मान वसम्बन्धें को समझने में सहायता दी है। शिक्षा और सीखने में सामूहिक एवं परस्पर सम्बन्धें का अवसर आताहै । आध्शुनिक शिक्षा मनोविज्ञान इन सम्बन्धों के विषय में अनुसन्धान करता है। और कक्षा में नेता के रुप में शिक्षक को अपना कार्य करने में सहायता देताहै। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक – शिक्षार्थी सम्बन्ध सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारकहै। स्कूल में पहुॅचकर बालक के सम्मुख शिक्षक उसके माता – पिता का सनि ले लेते है। प्रत्येक बालक अपने साने शिक्षक का एम आदर्श रखता है। दूसरी और शिक्षक भी यह सोचता है कि अदर्श शिक्ष कैसा होना चाहिए। शिक्षक सम्बन्धी विद्यार्थीयों और शिक्षकों को इन आदर्शो की परस्पर अन्तःक्रिया से कक्षा का व्यसीापन निर्धारित होता है। शिक्षा मनोविज्ञान से शिक्षक विद्यार्थी सम्बन्धों को बेहतर बनाने में सहायता मिलती है और सीखने के संगेगात्मक पहलुों तथा सम्बन्धों केमहत्व का पता चलता है। कक्षा का वातावरण शिक्षा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह वातावरण जहॉ एक और शिक्षक शिक्षार्थी के परस्पर सम्बन्धां से भी बनता हैं वही दूसरी और शिक्षार्थीयों के परस्पर सम्बन्धों से भी बनता है।

व्यवस्थापन एवं अनुशासन –

बाल केन्द्रित शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा व विद्यालय म` अनुशसन एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए बाल मनोविज्ञान का सहारा लिया जाता हैं अदाहरण के लिए कभी कभी कुठ शरारती बालाके में अच्छे समारयेजक के लक्षण दिखाई देते है ऐसी परिस्थिति में शिक्षकों को उन्हें दबाने के सिीान पर प्रोत्साहित करने के बारे में सोचना पड़ता है। बाल मनोविज्ञान ही शिक्षक को बतलाता है कि एक ही व्यवहार भिन्न – भिन्न व्यक्तियों के भिन्न – भिन्न प्रेरणाओं का कारण हो सकता है। शिक्षण को उनके असली प्रेरक कारणों का पता लगाकर उनके अनुकूल व्यवहार करना होता है।

प्रयोग एवं अनुसन्धान –

बालेकेन्द्रित शिक्षा में बालको को प्रयोग एवं अनुसन्ध्णान की ओर उन्मुख करने के लिए भी बाल मनोविज्ञान का सहारा लिया जाता है। नई – नई परिस्थितियों में नई – नई समस्याओं को सुलझाने के लिए शिक्षक को स्वयं प्रयोग करते रहना चाहिए और उससे निकले निष्कर्षो का उपयोग करना चाहिए। मनोविज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नए–नए अनुसंधानों से जो नए – नए तथ्य प्रकाश में आते है उसकी जॉच करने के लिए भी शिक्षक को प्रयोग करने की आवश्यकता है।

कक्षा की समस्याओं का निदान और निराकरण –

बालकेन्द्रित शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को पहचानने एवं उनका निराकरण करने के लिए भी बाल '– मनोविज्ञान का ही सहारा लिया जाता है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –28-32

प्रगतिशील शिक्षा –

प्रगतिशील शिक्षा पारम्परिक शिक्षा की प्रतिक्रिया का परिणाम हैं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा के विकास मे जॉन डीवी का विशेष योगदान है। जॉन डीवी संयुक्त राज्सय अमेरिका के एक मनोवैज्ञानिक थें। प्रगतिशलल शिक्षा की अवधारणा इस प्रकार है– शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बालक की शक्तियों का विकास है। वैयक्तिक विभिन्नता के अनुरुप शिक्षण प्रक्रिया में भी अन्तर रखकर इस उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है।

मस्तिष्क एवं बुद्धि –

मस्तिक एवं बुद्धि मनुष्य की उन क्रियाओं के परिणाम है जिन्हें वह जीवन की विभिन्न व्यावहारिक व सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के लिए करता है ज्यों – ज्यों वह जीवन की दैनिक क्रियाओं को करने में मानसिक शक्तियों का प्रयोग करता जाता है त्यों – त्यो उसका विकास भी होता जाता है। मस्तिष्क ही वह सबसे प्रमुख साधन है, जिसकी सहायता से मनुष्य अपनी समस्याओं का हल करता है। एक साधन के रुप में मस्तिक के तीन प्रमुख रुप है – चिन्तन, अनुभूति एवं संकल्प।

ज्ञान –

ज्ञान कर्म का ही परिणम हैं कर्म अनुभव से पूर्व आताहैं अनुभव ज्ञान का स्त्रोत है। जिस प्रकार बालक अनुभव से यह समझता है कि अग्नि हाथ जला देती है उसी प्रकार उसका सम्पूर्ण ज्ञान अनुभव पर आधारित होता है।

मौलिक प्रवृत्तियॉ –

सभी ज्ञान व्यक्तियें की उन क्रियाओं के फलस्वरुप प्राप्त होता है जो वे अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने में करते है सुरक्षा, भोजन तथा वस्त्र के लिए मानव जो संघर्ष करता है, उसका परिणाम होताहै कुछ क्रियाओं का प्रारम्भ और ये क्रियाऐ ही व्यक्ति की उन प्रवृत्तियें, मौलिक भवनाओं तथा रुचियों को जन्म देती है।

चिन्तन की प्रक्रिया –

चिन्तन केवल मनन करने से पूर्ण नही होता और न ही भावनासमूह से इसकी उत्पत्ति होतीह है। चिन्तन का कुठ कारण होता है। किसी हेतु के आधार पर मनुष्य सोचना प्रारम्भ करता है। यदि मनुष्य की क्रिया सरलतापूर्वक चलती रहती है तो उसे सोचने की आवश्यकता ही नही पड़ती किन्तु जब उसकी प्रगति में बकाधा पड़ती है तो वह सोचने के लिए बाध्य हो जाता है।

मनोविज्ञान के उपरोक्त सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं के आधार पर प्रगतिशील शिक्षा की नींव रखी गई है। जिसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि बालक को जो शिक्षा दी जाए वह मानसिंक क्रियाओं की विभिन्न दशओ के अनुसार हो प्रगतिशील शिक्षा के अन्तर्गत प्रेजेक्ट विधि, समस्य विधि एवं क्रिया कार्यक्रम जैसी शिक्षण पद्धतियों को अपनाया जाताहै।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है किप्रगतिशील शिक्षा का एममात्र उद्देश्य बालक की शक्तियें का विकास होता ह। इसलिए इसके अन्तर्गत इसी बात पर जोर दिया जात है किन्तु बालक में शक्तियोंका विकासकिस प्रकार से होगा इसके लिए कोई सामान्य सिद्धान्त निश्चित नही किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि भिन्न – `भिन्न रुचियों और योग्यताओं के बालको में विकास भिन्न – भिन्न प्रकार से होता हैक। अध्यापक को बालक की योग्यताओं पर दृष्टि रखते हुए उसे निर्देशन देना चाहिए । वातावरण तैयार करना होना चाहिए जिसमें प्रत्येक बालक को सामजिक विकास का प्र्याप्त अवसर मिले। प्रगतिशील शिक्षा का उद्देश्य जनतन्त्रीय मूल्यों की स्थापना है। यह हमें बताता है कि बालक में जनतन्त्रीय मूल्यां का विकास कियाज ना चाहिए शिक्षा के द्वारा हम ऐसे समाज

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –28-32

का निर्माण कर करना चाहते है। जिसमें व्यक्ति – व्यक्ति में कोई भेद नह ो सभी पूर्ण स्वतन्त्रता और सहयोग से काम करें प्रत्येक मनुष्य को अपनी स्वभाविक प्रवृत्तियों इच्छाओं और आकाक्षांओं के अनुसार विकसित होने का अवसर मिले, सभी को सम्मान अधिकार दिए जाएँ। ऐसा समाज तभी बन सकता है, जबकि व्यक्ति और समाज केहित में काई मोलिकअन्तर न मांना जाए। शिक्षा के द्वारा मनुष्य में परस्पर सहयोग और सामंजस्य की स्थाना होनी चाहिए। इस तरह, प्रगतिशिल शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना और शिक्षा द्वारा जन्त्रन्त को स्थापित करना होता है।

प्रगतिशिल शिक्षा में शिक्षक को भी महत्वपूर्ण सीान दिया गया है। इसके अनुसार शिक्षक समाज का सेवक है। उसे विद्यालय में ऐसे वातावरण का निमार्ण करना पड़ता हैजिसमें पलकर बालक के सामाजिक व्यक्तित्व का विकास हो सकें और वह जनतन्त्र का योग्य नागरिक बन सके डीवी ने शिक्षक को यहॉ तक महत्व दिय है किउसे समाज में ईश्वर का प्रतिनिधि ही कह दिया है। विद्यालय में स्वतन्त्रता औरर समानता के मूल्य बनाए रखने के लिए शिक्षक को अपने को बालको से बडा नही समझना चाहिए। उसे आज्ञाओं और उपदेशों के द्वारा अपने विचारों और प्रवृत्तियों को बालको पर लादने का प्रयास नही करना चाहिए। उसे बालको का निरीक्षण करके उनकी रुचियों योग्यताकें और गतिविधियों को समझकर उनके अनुरुप कार्यो में लगना चाहिए। इस प्रकार विद्यालय में शिक्षा बालकों की व्यक्तिगत विभिन्ताओं को ध्यान में रखकर दी जानी चाहिऐ। इससे विद्यालय के संचालन में कठिनाई बहुत कम हो जाती है।

प्रगतिशिल शिक्षा के अन्तर्गत अनुशासन बनाए रखने के लिए बालक की स्वाभविका प्रवृत्तियश्सें कसे कुंठित करना अनुचित माना जाता है। वास्तव में अनुशासन केवल बालक के निजी व्यक्तितव पर ही निर्भर नही है। उसका सामाजिक परिस्थतियेां से घनिष्ठ सम्बन्ध हें सच्चा अनुशासन सामाजिक अनुशासन है और यह बालक के विद्यालय के सामहिक कार्यो कमें भाग लेने से उत्पन्न होताळैक। विद्यालय में ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए कि बालक परस्पर सहयोग से रहने का अभ्यास करें। विद्यालय में एक समान उद्देश्य लेकर सामाजिक, नैनिक, बौद्धिक और शारीरिक कार्यो में एक सयाथ लाग लेने से बालकों में अनुशासन उत्पन्न होता है। और उन्हैं नियमित रुप से काम करने की आदत पड़ती है। विद्यालयों में कार्यक्रमो का बालक के चरित्र – निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। बालक को प्रत्यक्ष रुप से उपदेश न देकर उसे सामाजिक परिवेश दिया जाना चाहिए और उसमके सामने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जाने चाहिए कि उसमें आत्पमानुशासन उत्पन्न हो और वह सही अर्थो में सामाजिक प्राणी बने यह ठीक है कि विद्यालय में शान्तिपूर्ण वातावरण होने से काम अधिक अच्छा होता है। किन्तु शान्ति साधन है, साध्य नही। शिक्षक को तो अपनी और से बालको को उनकी प्रवृत्तियों के अनुसार नाना प्रकार के कार्मो मे लगाए रखना चाहिए और यदि इस प्रक्रियामें कभी – कभी कुछ अशांति भी उत्पन्न हो तो उसे दूर करने के लिए बालक की क्रियाओं पर रोक – टोक करना उचित नही है। आत्मानुशासन उत्पन्न करनेमें उत्तरदायित्व की भवना का विशेष महत्व है। उसे उत्पन्न करने के लिए विद्यालय के अधिकतर काम स्वयं विद्यार्थियों को सौप दिए जाने चाहिए। इनमें भाग लेने से उनमें अनुशासन की भवना उत्पन्न होगी।

प्रगतिशील शिक्षा के सिद्धान्तों के अनुरुप ही आजकल शिक्षा को अनिवार्य और सार्वभोमिक बनाने पर जोर दिया जाता है। शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तित्व का विाकास है और प्रत्येक व्यक्ति को उसके व्यसक्तित्वच का विकास करने के लिए शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए। आधुनिक शिक्षा में वैज्ञानिक और सामाजिक प्रवृथ्तत प्रगतिशिल शिक्षा का योगदान है। इसके अनुसार शिक्षा एक सामाजिक आवश्यक्ता है। इसका लक्ष्य व्यक्ति और समाज दोनो का विकास हैं इससे व्यक्ति का शारीरिक बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक विकास होता है।